उसमें गोलीकांड हुई और उसमें 9 मजदूर मारे गए थे। वे शहीद हुए और उसके बाद पुनः यह सरकारी नियन्त्रण में आ गया। लेकिन इसके बाद इसकी वित्तीय व्यवस्था के उत्थान के लिए, वित्तीय व्यवस्था को नियंत्रित करने के लिए कोई प्रयास नहीं किया गया। स्थिति को बिगड़ते देखकर 1992 में कंपनी ने या कार्पोरेशन ने इसको बी.आई.एफ.आर. में रेफर किया। बी.आई.एफ.आर. ने सरकार और निगम से उसकी वित्तीय व्यवस्था के बारे में रिपोर्ट मांग कि ये चलाने लायक हैं या नहीं तो कोई उस पर रिपोर्ट नहीं दी गई। जिस समय यह रिपोर्ट मांगी गई थी उस समय केवल 122 करोड़ रुपये का घाटा दिखाया गया था जबकि 1994 में जब कोइ व्यवस्था नहीं हुई उस वक्त 320 करोड़ रुपये का घाटा हो चुका था। अंत में जबकि तत्कालीन सरकार ने और प्रदेश सरकार ने और निगम ने कोई सहयोग नहीं दिया तो बी.आई.एफ.आर. ने मजबूर हो कर 2 जुलाई, 1997 को इन फैक्ट्रियों को बंद होने की आज्ञा दे दी। अब इस समय तीनों फैक्ट्रीज़ के बंद हो जाने पर करोड़ों रुपये की सम्पति जो इस समय अचल और चल सम्पत्ति हैं वह बेकार हो जाएगी, मजदूर बेकार हो जायेंगे। इसलिए मैं केन्द्रीय सरकार से अनुरोध करना चाहूंगा कि वह इस मामले में हस्तक्षेप करे और प्रदेश सरकार को आदेश दे कि वह इसकी वित्तीय व्यवस्था करे या खुद यह वित्तीय व्यवस्था करके मजदूरों को भूखों से बचाए।

धन्यवाद, मैंडम।

SHRI DIPANKAR MUKHERJEE (West Bengal): Madam Vice-Chairmen, I would like to associate myself with what Shri Ram Ratan Ram has said. These cement factories are facing these problems for the last six years and there has been a tremendous struggle on this issue. 1 request the Government to take notice of whatever he has said and the State Government must be asked to intervene in the matter immediately.

Discontentment Among the People due to Non-Construction of Underground Subway at Maunathbhanjan Railway Crossing in Uttar Pradesh

मौलानाहबीबुर्रहमाननोमानी (नाम-निर्देशित) : मोहतरमा, मैं एक बहुत ही अहम मसले की ओर सरकार का ध्या खींचना चाहता हूं। पूर्वी उत्तर प्रदेश में मऊनाथभंजन जो अभी-अभी 1987 में नया जिला बना हैं, यह एक विकासशील शहर हैं, तरक्की के रास्ते पर गामजन हैं, वहां पावरलूम का बहुत ज्यादा काम हैं। वहां की समस्या यह हैं कि रेवले लाइन शहर को दो हिस्से में बांटती हैं। एक तरफ आबादी हैं और दूसरी तरफ सरकारी दफातिर, शफाखाना, हासपीट वगैहर-वगैहर हैं। ट्रेफिक की वजह से वहां के शहरी बहुत ज्यादा परेशान हैं। इस मसले को बार-बार सदन में उठाया गया हैं।

मोहतरमा, आपको सुनकर हैरत भी होगी और दुख भी होगा कि कभी-कभी ऐसा भी हो जाता हैं कि बाज़-महिलाओं को वक्ती जरूरत के तहत लेकर लोग भागते हैं और गेट बंद होने की वजह से वह भी हो जाता हैं, जिसको नहीं होना चाहिए। सन् 1977 में जब शफी कुरेशी साहब रेल मंत्री थे तो उस वक्त उन्होंने वहां ओवर-ब्रिज बनाना मंजूर किया था। वह वहां गए थे। वहां की समस्याओं को, वहां लोगों की परेशानियों को देखकर उन्होंने ऐलान किया था, लेकिन वह सरकार चली गई तो उसके बाद अधिकारियों ने रिपोर्ट भेज दी कि आपके यहां ओवर ब्रिज नहीं बन सकता। तब से बराबर यह मांग चल रही हैं कि अगर ओवर-ब्रिज नहीं बन सकता तो अंडर-ब्रिज बन जाए। बड़ी गाड़ियां भले ही पास न हों, लेकिन मोटर का, रिक्शा,आटो-रिक्शा, टैक्सी इनकी ही गुजरगाह बन जाए ताकि कम से कम लाखो लोगों की जो परेशानी हैं, वह परेशानी दूर हो जाए।

मोहतरमा,मुझे बड़े अफसोस के साथ कहना पड़ता हैं कि जबसे मैं इस हाऊस में आया हूं, कई बार मैंने यह मसला यहां पर उठाया हैं। जाफर शरीफ साहब ने भी वादा किया था, लेकिन वह वादा पूरा नहीं हुआ और वह चले गए। राम विलास पासवान जी से भी मैं पिछले दिनों, फ्राइडे को मिला था, बात हुई और उन्होंने भी वादा तो किया हैं। अब यह होगा कि नहीं होगा, लेकिन अब पोजीशन यह हैं कि अगर इस वक्त इस मसले को हल नहीं किया जाता, ओवर-ब्रिज या अंनडर-ब्रिज बनाने की बात नहीं की जाती तो वहां पर बहुत बड़ा एजीटेंशन खड़ा हो जाएगा, लोग धरना देंगें, रेल की आमद-ब-रफ्त रोकेंगे, हर प्रकार के कानून को तोड़ने के लिए लोग तैयार हो जाएंगे और जब तक उन्हें यह आश्वासन या भरोसा नहीं मिलेगा, जब तब उसका ऐलान नहीं होगा कि यहां अंडर-ब्रिज बनेगा, वह रुकेंगे नहीं। यह बहुत लंबी चीज हो गई, आज 1977 से लेकर 20 वर्ष हो गए हैं।

तो, मोहतरमा, मैं इन स्पेशल मेंशन के जरिए आपके द्वारा सरकार की तवज्जुह दिलाना चाहता हूं और आपके जरिए यह चाहता हूं कि कम से कम इस आजादी के

पचासवे वर्ष में, स्वर्ण जयंती के मौके पर वहां के लोगों को यही एक तोहफा दे दें । उनकी आमद-व-रफ्त की सहूलियत पैदा करने के लिए अंडरग्राऊंड ब्रिज ही बना दिया जाए । इन्हीं लफ्जों के साथ मैं अपनी बात खतम करते हुए फिर से आपको धन्यवाद देता हूं, जो आपने मुझे अपनी बात कहन का मौका दिया । धन्यवाद ।

†مولانا حبیب الرحمان نعمانی "

نامزد": محترمہ ۔ میں ایک بہت ہی اہم مسئلہ کی طرف سرکار کا دھیان کھینچنا چاہتا ہوں۔ پوری اتر پردیش میں مئوناتھ بھجن جو ابھی ابھی ۱۹۸۷ میں نیا ضلع بنا رہا ہے۔ یہ ایک وکاس شیل شہر ہے۔ ترقی کے راستے پر گامزن ہے۔ وہاں پاور لوم کا بہت زیادہ کام ہوتا ہے۔ وہاں کی سمسیا یہ ہے کہ ریلوے لائن شہر کو دو حصوں میں بانٹتی ہے۔ ایک طرف آبادی ہے دوسری طرف سرکاری دفاتر –شفاخانہ۔ ھسپتال وغیرہ ہیں۔ ٹریفک کی وجہ سے وہاں کے شہری بہت زیادہ پریشان ہیں۔اس مسئلہ کو بار بار سدن میں اٹھایاگیا ہے۔

محترمہ ۔ آپ کو سنکر حیرت بھی ہوگی اور دکھ بھی ہوگا کہ کبھی کبھی ایسا بھی ہو جاتا ہے کہ بعض مہیلاؤں کو وقتی ضرورت کے تحت لے کر لوگ بھاگتے ہیں اور گیٹ بند ہونے کی وجہ سے وہ بھی ہو جاتا ہے جسکو نہیں ہونا چاہئے۔ ۱۹۷۷ میں جب شفیح قریشی صاحب ریل منتری تھے تو اسوقت انھوں نے وہاں اوور برج بنانا منظور کیا تھا۔ وہ وہاں گئے تھے۔ وہاں کی سمسیاؤں کو وہاں کے لوگوں کی پریشانیوں کو دیکھکر انھوں نے اعلان کیا تھا۔ لیکن وہ سرکار چلی گئی تو اسکے بعد ادھیکاریوں نے رپورٹ بھیج دی کہ آپنے یہاں اوور برج نہیں بن سکتا۔ تب سے برابر یہ مانگ چل رہی ہے کہ اگر "اوور برج" نہیں بن سکتا تو "انڈر برج" بن جائے۔ بڑی گاڑیاں جلے ہی پاس نہ ہوں۔ لیکن موٹر کار ۔ رکشا۔ آٹو رکشا ۔ٹیکسی انکی گزرگاہ بن جائے۔ تاکہ کم سے کم لاکھوں لوگوں کی جو پریشانی ہے وہ پریشانی دور ہو جائے۔

محترمہ ۔مجھے بڑے افسوس کے ساتھ کہنا پڑتا ہے۔کہ جب سے میں اسم ھاؤس میں آیا ہوں۔ کئی بار میں نے یہ مسئلہ یہاں پر اٹھایا ہے۔ جعفر شریف صاحب نے بھی وعدہ کیا تھا۔ لیکن وہ وعدہ پورا نہیں ہوا اور وہ چلے گئے۔ رام ولاس پاسوان جی سے بھی میں پچھلے دنوں فرائ ڈے کو ملا تھا۔ بات ہوئ اور انھوں نے بھی وعدہ تو کیا ہے۔ اب یہ ہوگا کہ نہیں ہوگا۔ لیکن اب پوزیشن یہ ہے کہ اگر اسوقت اس مسئلہ کو حل نہیں کیا جاتا "اوور برج" یا "انڈر برج" بنانے کی بات نہیں کی جاتی

†[]Translilcraiion in Arabic Snipt

تو وہاں پر بہت بڑا ایجی ٹیشن کھڑا ہو جائے گا۔ لوگ دھرنا دینگے ریل کی آمد و رفت روکینگے۔ ہر طرح قانون کی توڑنے کیلئے لوگ تیار ہو جائینگے۔ جب تک انھیں یہ آشواسن یا بھروسہ نہیں ملے گا جبتک اسکا اعلان نہیں ہوگا کہ یہاں "انڈر برج" بنے گاوہ رکینگے نہیں۔ یہ بہت لمبی چیز ہو گئی،آج ۱۹۷۷ سے لیکر ۲۰ ورش ہو گئے ہیں۔

محترمہ۔ میں اس "اسپیشل مینشن" کے ذریعہ آپکے دوارا سرکار کی توجہ دلانا چاہتا ہوں اور آپکے ذریعہ یہ چاہتا ہوں کہ کم سے کم اس آزادی ۵۰ ویں سال میں "سورن جینتی کے موقع پر" وہاں کے لوگوں کی یہی ایک تحفہ دیں۔انکی آمد و رفت کی سہولیت پیدا کرنے کیلئے "انڈرگراؤنڈ برج" ہی بنا دیا جائے۔ انہی لفظوں کے ساتھ میں اپنی بات کو ختم کرتے ہوئے پھر سے آپ کو دھنیواد دیتا ہوں۔ جو اپنے مجھے اپنی بات کہنے کا موقع دیا۔ دھنے واد۔

श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी (उत्तर प्रदेश) : महोदया, मैं एसोसिएट करता हूं नोमानी साहब के विषय के साथ । सरकार को वहां पर अंडरब्रिज या ओवर ब्रिज, जो भी तकनीकी तोर से हो सके, उसको तुरन्त बनवाने की व्यवस्था करनी चाहिए । वह उत्तर प्रदेश का विकासशी जिला हैं । वहां पर गरीब बुनकर लोग रहते हैं । उनकी समस्याओं की तरफ ध्यान देने की आवश्यकता हैं । नोमानी साहब कई दफे इस मसले को यहां हमारे सामने रख चुके हैं ।

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे) : बहुत-बहुत शुक्रिया नोमानी जी और चतुर्वेदी जी । श्री इकबाल सिंह । श्री मुथु मणि । श्री डावा लामा। श्री सतीश प्रधान । श्री दबे ।

Deaths due to Consumption of Tobacco And Gutkha

श्री अनन्तराया देवशंकर दवे (गुजरात) : धन्यवाद, महोदया । मैं एक बहुत ही महत्वपूर्ण मसले की ओर आपके माध्यम से सरकार का ध्यान खींचना चाहता हूं । महोदया, पूरे देश में, समाज में जो गुटका आज बन रहा हैं, उनसे लोगो की हालत दिन प्रति दिन बिगड़ती जाती हैं । हमारे देश में करीब 8 लाख लोग प्रतिवर्ष कैन्सर के रोग से मरते हैं । टाटा मैमोरियल, रिसर्च इंस्टीट्यूट ने यह फिगर दी हैं कि वर्ष 2015 तक करीब 15 लाख लोग सिगरेट से, गुटका से और तम्बाकू की वजह से होन वाली जो डिसीज हैं उनसे इस देश में मरने वाले हैं । महोदया, प्रति 40 सैंकिड पर एक आदमी कैसर से मरता हैं । जो फिगर्स हिन्दू में पब्लिश हुए हैं, डी.एस. पद्मनाभन ने बड़ी मेहनत करके, फिगर्स एकत्र करके उन्होंने दिए हैं कि हर साल कैंसर के पीछे सरकार 2,853 करोड़ रुपया खर्च करती हैं और जो हमें रिवेन्यू मिलती हैं वह सिर्फ 2,353 करोड़ रुपया मिलती हैं, 500 करोड़ रुपया वैसे ही हमें घाटा हैं । शायद मेरे मित्र श्री मुखर्जी मुझसे नाराज होंगे, शायद वे सिगरेट पीते हैं, लेकिन मैं कहना चाहता हूं कि हम लोग कई इंस्टीटयूट्स के लिए, कैंसर इंस्टीटयूटों के लिए छोटे-छोटे अस्पतालों के लिए लोगों के पास जाकर पैसे मांगते हैं और ऐसे जो रोग होते हैं देश में, उनका आज तक कोई इलाज नहीं ढूंढा जा सका हैं । मेरा दूसरा कहना यह हैं कि सबोरडीनेट लेजिस्लेशन ने एक सुझाव भी दिया हैं गवर्नमेंअ को । आज जब रेणुका चौधरी जी के हाथ में यह डिपार्टमेंट हैं और जो पेपर में एडवरटाइज़मेंट आती हैं, बड़ी ब्यूटीफूल एडवरटाइजमेंट आती हैं । आज छोट-छोटे बच्चों में गुटके की आदत पड़ गई हैं । आज स्कूल के आजू-बाजू में उनकी केबिनें लगी हुई हैं, वह बंद कर दी जानी चाहिएं । दिल्ली सरकार ने और दूसरी सरकारों ने कुछ निर्णय भी लिए हैं कि पब्लिक प्लेस में सिगरेट नहीं पीना चाहिए । नो स्मोकिंग, जो टोबेको डे यू.एन.ओ. ने जाहिर किया हुआ हैं । यह गुटके वाली समस्या बड़ी गंभीर समस्या हैं । इतनी ब्यूटीफूल उसकी एडवटाइज़मेंट आती हैं और जो कानूनी चेतावनी हैं, वह 3 मिली मीटर से ज्यादा नहीं, इतने छोटे अक्षरों में